शब्द शक्ति

"शब्द एवं अर्थ के सम्बन्ध में विचार करने वाले तत्व को शब्द शक्ति कहते हैं"

उदाहरण – चिंतामणि ने कहा है –

"जो सुन पड़े सो शब्द है
समुझि परै सो अर्थ"

अर्थात जो सुनाई पड़े वह शब्द है तथा उसे सुनकर जो समझ में आवे वह उसका अर्थ।

शब्द की तीन शक्ति होती है –

(i) अभिधा
(ii) लक्षणा
(iii) व्यंजना

(i) अभिधा – साक्षात संकेतिक अर्थ के बोधा व्यापार को अभिधा कहते है। अभिधा को शब्द की प्रथमाशक्ति भी कहते है।

अभिधा शक्ति से प्राप्त अर्थ चार प्रकार के होते है –

(i) जाति बोधक
(ii) गुण बोधक
(iii) क्रिया बोधक
(iv) यदृच्छा बोधक।

इसमें क्रमशः जाति, गुण, क्रिया और इच्छानुसार निर्मित संज्ञाओं का बोध होता है।

अभिधा के तीन प्रकार है –

(i) रूढ़
(ii) यौगिक
(iii) योगरूढ़।

(i) रूढ़ – जिनका खंड न हो और होने पर अर्थहीन हों। जैसे – "घर" इसका खंडन नहीं

प्रश्न

1. शब्द के तीनों शक्तियों का उद्देश्य क्या है ?
— अर्थ की व्यजना अर्थात अर्थ को प्रकट करना।

2. तो फिर तीन शब्द शक्तियों का उदय क्यों हुआ ?
— मनुष्य के विनोदप्रिय स्वभाव के कारण या चमत्कारप्रिय स्वभाव के कारण शब्द की तीन शक्तियों का उदय हुआ।

लक्षणा में संकेत से काम नहीं चलता इसमें प्रयोजन लक्ष्य के आधार पर अर्थ स्पष्ट होता है। उदाहरण के लिए — अगर मालिक सैंधव मांगा तो उसे खाते समय नमक देंगे और जाते समय मांगा तो घोड़ा लाकर देंगे।

(क) अभिधा में मुख्यार्थ महत्वपूर्ण है।
(ख) लक्षणा में मुख्यार्थ में बाधा होती है प्रयोजन महत्वपूर्ण है।
(ग) अभिधा एक आधार है जिसपर लक्षणा और व्यंजना खड़ी है। अभिधा के बिना इन दो शक्तियों की कल्पना नहीं की जा सकती।

डॉ. बलराम कुमार
हिन्दी-विभाग
डॉ. एल. के. जी. डी. कॉलेज
ताजपुर, समस्तीपुर

Scanned with CamScanner